

# Rohtas Mahila College, SASARAM

## Study Material for B.A. Part II SANSKRIT (Paper VII)

Dr. Savitri Singh  
Associate Professor,  
Deptt. of Sanskrit,  
R.M.C. SASARAM

Date  
28.07.2020  
~~28.07.2020~~

Topic: व्यञ्जना का स्वल्प पूर्व भङ्ग (काठ्ययीयिका)

अभिधायिनी व्यञ्जना के लक्षण के सम्बन्ध में आचार्य विश्वनाथ ने कहा है संयोग आदि की सहायता से अनेकार्थ शब्द के किसी एक प्रासंगिक अर्थ का निर्णय हो जाने पर भी जिसके द्वारा अन्य अप्रासंगिक अर्थ का ज्ञान होता है वह अभिधायिनी/अभिधायिनी व्यञ्जना कहलाती है।

जब अनेकार्थ शब्दों में यह शब्द किस अर्थ का बोधक है, यह निर्णय नहीं होता, तब नीचे लिखे साधनों से उनके अर्थ का निर्णय किया जाता है—(1) संयोग (2) विप्रयोग (3) साहचर्य (4) विरोधिता (5) अर्थ (6) प्रकरण (7) लिंग (8) अन्यशब्दों की सन्निधि (9) सामर्थ्य (10) औचित्य (11) देश (12) काल (13) व्यक्ति (14) स्वर आदि। ये चार्थों अनेकार्थ शब्दों का जहाँ पर निश्चय नहीं हो पाता, वहाँ विशेष अर्थ का बोध कराते हैं।

संयोगो विप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता ।

अर्थः प्रकरणं लिंगं शब्दस्थान्यस्य सन्निधिः ॥



# लक्षणामूला व्यञ्जना (विश्वनाथ)

लक्षणीपास्यते यस्य कृते तत्तु प्रयोजनम् ।

यथा प्रत्याच्यते सा स्याद् व्यञ्जना लक्षणाऽऽश्चथा ॥ १०॥

(कौटिलीयिक द्वितीयखिला)

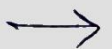
जिस अर्थ की प्रतीति के निमित्त लक्षणा मानी जाती है, वही प्रयोजन है, तथा जिस वृत्ति के द्वारा प्रतीति होती है वह लक्षणामूला व्यञ्जना कही जाती है।

उपासना आशयण और विधान पर्यायवाची शब्द हैं। प्रत्याचन का अर्थ बोधन है। जैसे 'गंगायां घोषः' इस वाक्य में 'गंगा' पद का अर्थ अभिव्या वृत्ति द्वारा प्रवाह (जल-धारा) जाना गया है। तदनन्तर 'गंगा' में 'घोषाधस्ता' अनुपपन्न जानकर तट रूप अर्थ को बोध कर लक्षणा भी शान्त हो गई। अब शीतल-पावन-प्रतीतिरूप प्रयोजन जिस वृत्ति के द्वारा शब्द का प्रवाह रूप अर्थ कहकर अभिव्या तथा तट रूप अर्थ कहकर लक्षणा के विरत हो जाने पर जिस शान्ति के प्रभाव से शीत्य एवं पावनत्व रूपी प्रयोजन की प्रतीति होती है, उसे लक्षणामूला व्यञ्जना कहते हैं।

इस प्रकार व्यञ्जना के दो भेद।  
शाब्दी व्यञ्जना और आर्थी व्यञ्जना में शाब्दी व्यञ्जना के भी दो भेद हुए - अभिव्यामूला एवं लक्षणामूला।

अब आर्थी व्यञ्जना का निरूपण करते हुए आचार्य विश्वनाथ कहते हैं।

वक्तृषो द्वयवाक्यानां काकोश्वेत्ताऽऽदिह्य-य ।  
वैशिष्ट्यादन्यमर्थं या बोधयेत् सार्थसम्भवा ॥ १॥



वक्ता, बोड्या, वाम्भ, काकु और न्येष्टा आदि  
की विलक्षणता के कारण जो शब्दशास्त्रि अन्ध अंध को बौध्य  
कराती है उसे आर्षी या अर्षसम्भवा व्यञ्जना कहते हैं।

जैसे गतोऽस्तमर्कः सूर्य अस्त हो गये। यहाँ  
पर वक्ता तथा बोड्या के आस्त्रिक द्विजाति होने पर यह  
सन्ध्यावन्दन का अवसर है, वस अर्ष की प्रतीति होगी।  
उवाचवालो के वक्ता तथा बोद्योथ होने पर गाथों को लौचओ  
अथ धर चलेगे, यह व्यंज्यार्ष प्रतीत होता है।

अर्थानुसन्धान से व्यंज्यार्ष बोध्य होने के कारण  
आर्षी व्यञ्जना कही गयी।